nbt.india
एक: सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास संवाद

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50; वार्षिक ₹ 5.00

मार्च 2015 • वर्ष 20, अंक 3

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

विदेशी मंडप में सम्मानित अतिथि देश एवं फोकस देश 3

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2015 : उद्गार 4

बाल मंडप 4

थीम मंडप 5

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा और उसकी सहभागिता से आयोजित कार्यक्रम 6

वरिष्ठ पत्रकार श्री बल्देव भाई शर्मा ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष का पदभार सँभाला 7

नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच 7

लेखक मंच व साहित्य मंच 8

नवीनतम प्रकाशन

तीन बीसी पार : आधुनिक राजस्थानी कहानी
नंद भारद्वाज (संपादन और अनुवाद)
पृ. 256 ₹ 255
ISBN 978-81-237-7343-8

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2015 का समापन - अगले वर्ष जनवरी में फिर मिलेंगे

"अगले वर्ष विशिष्ट अतिथि देश का सम्मान चीन को दिया जाएगा," यह उद्घोषणा न्यास के अध्यक्ष (अब तत्कालीन) श्री ए. सेतुमाधवन ने मेले के समापन-अवसर पर की। "9 से 17 जनवरी, 2016 की अवधि में, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के 24वें संस्करण में, नई दिल्ली में हम फिर मिलेंगे," मेले के सह-आयोजक, आईटीपीओ के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जे.एस. दीपक की इस घोषणा के साथ ही नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2015 का गरिमापूर्ण ढंग से समापन हो गया।

इस वर्ष के पुस्तक मेले के संबंध में न्यास-अध्यक्ष श्री सेतुमाधवन ने कहा, "इस वर्ष मेले में पुस्तकप्रेमियों का उत्साह प्रशंसनीय था। अगले वर्ष पुस्तक मेले में चीन की भागीदारी को लेकर हम सब अत्यंत उत्सुक हैं।" इस अवसर पर मंत्री एवं डिप्टी चीफ, मिशन, चीन गणराज्य, श्री यो जिंग ने चीन को 2016 में विशिष्ट अतिथि देश का सम्मान प्राप्त होने पर कहा, "यह घोषणा हमारे लिए सम्मान की बात है।"

इस वर्ष मेले में 'सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पुरस्कार' की शुरुआत की गई थी जिसमें विदेशी मंडप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पुरस्कार द. कोरिया को प्रदान किया गया। हैचे बुक्स को अँग्रेज़ी पुस्तकों की श्रेणी में पुरस्कार मिला। 'राधा स्वामी सत्संग' को हिंदी तथा भारतीय भाषा श्रेणी में अच्छे प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया तथा 'भारती भवन' को बाल श्रेणी में उत्तम प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत किया गया।

एनबीटी द्वारा सिंगापुर तथा द. कोरिया को क्रमशः मेले में विशिष्ट अतिथि देश तथा फोकस देश के रूप में भागीदारी के लिए स्मृति चिह्न प्रदान किये गए। इस अवसर पर एनबीटी द्वारा प्रकाशित तथा सुश्री गीता धर्मराजन द्वारा लिखित पुस्तक 'माई उम्माज़ साड़ी' का लोकार्पण भी हुआ। इससे पूर्व, एनबीटी के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने सभी अतिथिगणों का स्वागत करते हुए कहा, "इस वर्ष मेले में युवाओं का उत्साह देखने वाला था। युवाओं में पुस्तक मेले का रोमांच बढ़ता जा रहा है।" उन्होंने मेले में भाग लेने के लिए सिंगापुर तथा द. कोरिया का भी धन्यवाद किया।

विदित हो कि इस वर्ष पुस्तक मेले में, एक अनुमान के अनुसार, लगभग 10 लाख पुस्तकप्रेमी आए जो पुस्तक मेले की लोकप्रियता का प्रमाण है।

उद्घाटन

"सरकारें बदल जाती हैं, लेकिन संस्कार, सभ्यता और संस्कृति कभी नहीं बदलती।... भारत एक ऐसी संस्कृति है जिसने विश्व को 'वसुधैव कुटुंबकम्' का सूत्र दिया," मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार, माननीया श्रीमती स्मृति ज़ुबिन इरानी ने नई दिल्ली के प्रगति मैदान में, 14 फरवरी, 2015 को, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के 23वें संस्करण का उद्घाटन करते हुए ये उद्गार व्यक्त किए। मंत्री महोदया ने अपना अधिकतम संबोधन हिंदी में ही किया। उन्होंने विदेशी मेहमानों को संबोधित करते हुए कहा, "मैं सभी विदेशी मेहमानों से माफी चाहती हूँ कि मेरी बात समझने के लिए आपको अनुवादकों का सहारा लेना पड़ेगा, क्योंकि आज मैं हिंदी में ही अपनी बात रखूँगी।" श्रीमती इरानी ने प्रगति मैदान में हंसध्वनि थिएटर में आयोजित भीड़भरे उदघाटन-समारोह में पुस्तक

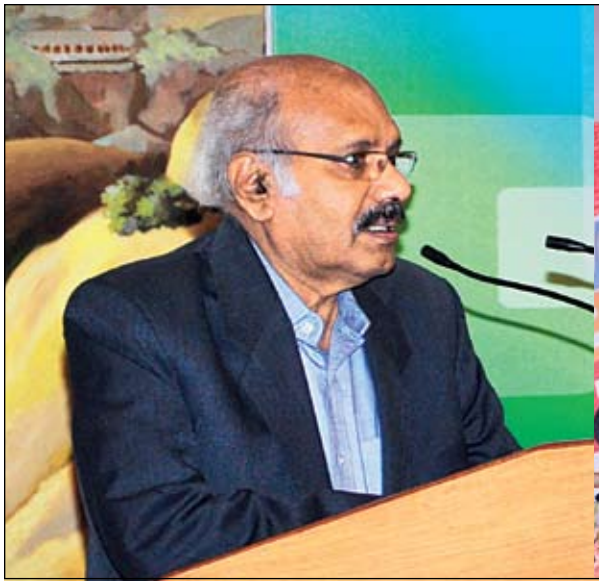

प्रोन्नयन से जुड़ी अनेक घोषणाएँ भी कीं। उन्होंने कहा कि 'देश के सभी एअरपोर्ट और रेलवे स्टेशनों पर एनबीटी ही नहीं अन्य प्रकाशकों की भी सभी भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी।' उन्होंने जिला स्तर पर 'बुक क्लब' की व्यवस्था सुनिश्चित करने की भी बात कही।

बड़ी संख्या में आए युवाओं को देखते हुए मंत्री जी ने घोषणा की, "मैं चाहती हूँ कि युवा अपने देश की संस्कृति और साहित्य की जड़ों को तलाशने एशियाई देशों में जाएँ और शोध करें। इसके लिए मैं पाँच सदस्यों की एक टीम का प्रस्ताव रखती हूँ जिसमें तीन युवा, एक इतिहासकार और एक लेखक रहेंगे।"

उद्घाटन-समारोह के विशिष्ट अतिथि, जाने-माने हिंदी साहित्यकार श्री नरेंद्र कोहली ने देश के रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों आदि सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की उपेक्षा पर दुख व्यक्त किया और सरकार से आह्वान किया कि 'सरकार उन स्थानों पर पुस्तकें उपलब्ध कराए जहाँ पाठक पहुँचता है।... पुस्तकें पाठकों तक पहुँचें इसके लिए मिल-बैठकर बात करें।' डॉ. कोहली ने बांग्ला उपन्यासकार विमल मित्र के उपन्यास 'राजा बदल' से एक प्रसंग का उल्लेख करते हुए पुस्तक के महत्व को यह कहकर समझाया कि 'जिस घर में पुस्तक नहीं, वहाँ संस्कृति नहीं।' उन्होंने यह भी कहा, "सबसे अधिक शोभा पुस्तकों से होती है, संस्कृति से होती है।'' पाठकों तक पुस्तकें न पहुँचने पर चिंतित डॉ. कोहली ने कहा, "हमें उस दीवार को तोड़ना होगा जो पाठक और पुस्तकों के बीच खड़ी है।"

खुशनुमा धूपछाँही वातावरण में आयोजित उद्घाटन-समारोह में दक्षिण कोरिया के राजदूत एवं सिंगापुर के उच्चायुक्त भी मंच पर उपस्थित थे। कोरियाई राजदूत श्री जुन ग्यू ने भारत से अपना 'निकट संबंध' बताते हुए कहा, "तकरीबन दो हजार साल पहले भारत की एक राजकुमारी का कोरियाई राजकुमार से विवाह हुआ था। मैं उसी परिवार से संबंध रखता हूँ।" उन्होंने अपने संबोधन में कहा, "आप भले ही दक्षिण कोरिया को सैमसंग और एलजी जैसी कंपनियों के कारण जानते हों, लेकिन दोनों देशों का संबंध बहुत पुराना है। मैं चाहता हूँ कि भारतीय बच्चे कोरियाई पुस्तकें पढ़ें और कोरियाई बच्चे भारतीय साहित्य।" उन्होंने इच्छा जाहिर की कि 'दक्षिण कोरिया और भारत विश्व के सबसे अच्छे दोस्त बनें! साहित्य-संस्कृति इसमें बड़ा योगदान दे सकती है।' इस अवसर पर सिंगापुर के उच्चायुक्त लीम खो क्वाँग ने कहा, "सिंगापुर के विकास में भारतीयों ने बड़ा योगदान दिया है। इस पुस्तक मेले में इस बार सिंगापुर से 50 लोगों का एक दल यहाँ साहित्य के प्रोत्साहन हेतु आया है।" उच्चायुक्त महोदय ने कहा, "यह वर्ष भारत-सिंगापुर के राजनीतिक संबंधों का 50वाँ वर्ष भी है।.... विशिष्ट अतिथि देश का दर्जा मिलने से हम सम्मानित अनुभव कर रहे हैं।" विदित हो कि 14 से 22 फरवरी तक चले इस विश्व पुस्तक मेले में इस बार सिंगापुर विशिष्ट अतिथि देश एवं द. कोरिया फोकस देश के रूप में आमंत्रित थे।

इस अवसर पर मंच पर उपस्थित सचिव, उच्चतर शिक्षा, भारत सरकार, श्री सत्यनारायण मोहंती ने कहा, "जरूरी नहीं शिक्षा वही है जो पाठ्य पुस्तकों में है, इससे इतर भी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। पूर्वोत्तर में लेखन बिखरा हुआ है, लेकिन उसके बारे में हम बहुत नहीं जानते। यह आयोजन हमें उस लेखन से जोड़ेगा।"

रा.पु. न्यास के अध्यक्ष, श्री ए. सेतुमाधवन ने बताया कि 'इस बार पुस्तक मेले का थीम 'सूर्योदय : पूर्वोत्तर भारत के उभरते स्वर' है। साथ ही, इस बार कई नई गतिविधियों को मेले में जोड़ा गया है।' अध्यक्ष महोदय ने किफायती मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें उपलब्ध कराने की न्यास की नीति के संबंध में बताया और कहा कि 'हम ई-बुक्स के क्षेत्र में भी प्रवेश कर चुके हैं। हमारी ई-बुक्स में कुछ नई पुस्तकें आ भी चुकी हैं।' मेले के सह-आयोजक, भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ) के मुख्य कार्यकारी निदेशक, श्री जे.एस. दीपक ने कहा, "यह मेला अब तक आयोजित मेलों में सबसे बड़ा है और इस बार 30 विदेशी प्रकाशक भाग ले रहे हैं।" श्री दीपक ने पुस्तकों की महत्ता पर बोलते हुए कहा, ''पुस्तकें हमारी अंतर्दृष्टि खोलती हैं।"

कार्यक्रम की शुरुआत दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत संकाय के छात्रों ने 'संगत्लद्तम' तथा 'सारे जहाँ से अच्छा' गाते हुए की। अतिथियों का पुष्प-गुच्छ से स्वागत किया गया। अंत में, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने सभी अतिथियों, दर्शकों, प्रकाशकों एवं पाठकों का यह कहते हुए धन्यवाद किया कि 'आप हैं तो यह आयोजन है।'

उद्घाटन-समारोह के बाद मंत्री महोदया श्रीमती इरानी ने हॉल सं.7 में स्थापित थीम मंडप, बाल मंडप और विदेशी मंडप का भी दौरा किया। थीम मंडप में उनका स्वागत पूर्वोत्तर के पारंपरिक नृत्य, बिहू से किया गया। तदंतर, मंत्री जी ने अतिथि देश सिंगापुर एवं फोकस देश द. कोरिया के मंडपों का भी उद्घाटन किया।

विदेशी मंडप में सम्मानित अतिथि देश एवं फोकस देश

नई दिल्ली 'विश्व पुस्तक मेला के 23वें संस्करण में सिंगापुर को सम्मानित अतिथि देश का दर्जा दिया गया, जबकि पहली बार, एक फोकस देश की अवधारणा के तहत, दक्षिण कोरिया को फोकस देश के रूप में आमंत्रित किया गया। सिंगापुर तकनीकी रूप से एक विकसित देश होने के अतिरिक्त, भारत की ही तरह, एक बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक देश भी है। भारत-सिंगापुर के बीच राजनयिक-संबंधों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर सिंगापुर को विशिष्ट अतिथि देश के रूप में आमंत्रित किया गया था। एनबीडीसीएस सिंगापुर की अध्यक्ष, सुश्री क्लेयर चियांग के नेतृत्व में 50 लेखकों, चित्रकारों, ग्राफिक नॉवेल लेखकों, प्रकाशकों, पुस्तकालयकर्मियों, पुस्तक विक्रेताओं आदि के एक दल ने न.दि.वि.पु.मे. में भागीदारी की। प्रगति मैदान के हॉल सं. 7 में स्थापित विशेष मंडप में सिंगापुर की भव्य उपस्थिति रही। इस आयोजन में सिंगापुर की नेशनल आर्ट काउंसिल और मीडिया डेवलपमेंट अथॉरिटी सहयोगी संस्था रहीं।

सिंगापुर के स्टॉल पर वहाँ के 30 प्रकाशकों व लेखकों की लगभग 1,500 पुस्तकें प्रदर्शित थीं। स्टॉल का विशेष आकर्षण यह था कि हिंदी की अनेक पुस्तकें भी करीने से यहाँ सजाकर रखी गई थीं। ये रंगबिरंगी पुस्तकें विशेष तौर पर बच्चों के लिए थीं। भारत से संबंधित पुस्तकें, यथा, 'इंडियन इन सिंगापुर' आदि भी यहाँ प्रदर्शित थीं। दरअसल, सिंगापुर के संबंध में यह जानकर हम भारतीयों को खुशी हो सकती है कि यहाँ भारतीयों, खासकर तमिलों, की एक बड़ी संख्या निवास करती है। सिंगापुर में 40% लोग तमिल समझते या बोलते हैं। स्वाभाविक रूप से यहाँ भारतीय भाषाओं का भी एक अपना बाजार है जहाँ हिंदी, तमिल, उर्दू व मलयालम सरीखी भाषाओं की पुस्तकें मिलती हैं। वैसे, अँग्रेज़ी, मलय व चीनी भाषा की भी पुस्तकें यहाँ बिकती हैं।

सिंगापुर के स्टॉल के पास बने मंच पर प्रतिदिन अनेक कार्यक्रम हुए जिनमें प्रमुख थे भारतीय प्रवासी लेखकों के लिए सत्र, कविता व कहानी पाठ, चित्रकारी कार्यशाला आदि। सिंगापुर से आए कुछ मुख्य व्यक्तित्व थे– एनबीडीसीएस, सिंगापुर के कार्यकारी निदेशक श्री आर. रामचंद्रन; लेखकगण जफर अंजुम, हरेश शर्मा, रोजमेरी सोमैया, कुनूर कृपलानी; समूह अध्यक्ष टोनी टैंग; सिंगापुरी लेखक – चाऊ टेक सेंगे, जोसेफिन चिया, यॉन्ग शू हूंग; शिक्षाविद् सुनीता लाड भांबरी; चित्रकार डेविड ल्यू; एएनसी की मुख्य कार्यकारी अधिकारी कैथी लाई आदि।

पुस्तक मेला में शामिल फोकस देश, द. कोरिया का एक बड़ा-सा सुसज्जित स्टॉल हॉल सं. 7 में सिंगापुर स्टॉल से सटा हुआ था। इस स्टॉल पर दस प्रमुख कोरियाई लेखकों की कृतियों को अलग से, व्यवस्थित रूप से, प्रदर्शित किया गया था। ये कृतियाँ मूल कोरियाई भाषा में थीं जिनमें से कुछ के अँग्रेज़ी अनुवाद भी थे। ये लेखक थे– किम यूआँग- हा, क्यूँग-सूक शिन, इयून हिकयुंग, यी मुन-यॅल, लि सियँग-ऊ, जो कियोंग-रेन, जो जंग-राय, हन कँग, ह्वाँग सोक-याँग और ह्वाँग सुन-मी। कोरियाई स्टॉल पर पुस्तकों को प्रमुख छह शृंखलाओं में प्रदर्शित किया गया था जिनमें बाल पुस्तकें, कॉमिक्स (मन्हवा), इतिहास-कला व पत्रिकाएँ, कोरियाई भाषा, साहित्य व अन्य पुस्तकें थीं। 'ट्रेजर हंट इन इंडिया' भारत से संबंधित कॉमिक्स थी।

कोरियाई स्टॉल के पास बने मंच पर प्रतिदिन कोरियाई संदर्भ में अनेकानेक साहित्यिक आयोजन होते रहे जिनमें रचना पाठ, अनुवाद, कार्यशाला, चित्रकारी आदि के सत्र शामिल हैं। कोरियाई हंगुल कैलिग्राफी प्रतिदिन सिखाया गया। कार्यक्रमों में भारत की ओर से कोरियाविद् प्रो. दिविक रमेश अनेक सत्रों में आए। प्रो. के. श्रीलता कविता पाठ में शामिल हुए। कोरियाई उपन्यास 'अवर ट्विस्टेड हीरो' के हिंदी अनुवाद का लोकार्पण भी हुआ। कोरियाई लेखिका क्युंग सुक शिन के हिंदी में अनूदित उपन्यास, 'माँ का ध्यान रखना' पर भी चर्चा हुई।

सिंगापुर तथा द. कोरिया के विशेष रूप से निर्मित बड़े स्टॉल के अलावा विदेशी मंडप में अन्य देशों के भी स्टॉल लगे थे। ये देश और संस्थाएँ थीं : चीन, फ्रांस, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, सं.अ. अमीरात, मिस्र, जर्मनी, टर्की, स्पेन, ईरान, जापान, सऊदी अरब, नेपाल, श्रीलंका, पोलैंड, यूनेस्को एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2015 : उद्‌गार

- **श्री प्रणव मुखर्जी** (राष्ट्रपति) : पुस्तक मेले समाज की प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक, ज्ञान और जागरूकता के प्रसार के प्रमुख साधन हैं। पुस्तकें जीवनभर की साथी और मित्र होती हैं। ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान को आगे ले जाने में मदद करती हैं।
- **श्रीमती स्मृति जुबिन इरानी** (मानव संसाधन विकास मंत्री): यह मेला आगंतुकों के समक्ष पुस्तकों एवं पठन के आकर्षक और अद्‌भुत संसार का द्वार खोलता है।
- **श्री उपेंद्र कुशवाहा** (मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री) : बिना पुस्तक का समाज बिना मस्तिष्क के शरीर की तरह है। 'विश्व पुस्तक मेला' ज्ञान का एक ऐसा भंडार है जहाँ दिमाग की परतें खुल जाती हैं। पुस्तक के सहारे हम हर दिशा में, हर एक क्षेत्र में, हर समय उड़ान भर सकते हैं।
- **श्रीमती मृदुला सिन्हा** (राज्यपाल; गोवा) : नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का आयोजन बेहद भव्य और सुव्यवस्थित है।
- **श्री सत्यनारायण महांती** (सचिव, उच्चतर शिक्षा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' पठन संस्कृति के प्रोन्नयन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **श्री वीरेंदर सहवाग** (प्रसिद्ध भारतीय क्रिकेटर) : पुस्तक मेले में आना मेरे लिए बेहतरीन अनुभव रहा। एक छत के नीचे इतनी सारी पुस्तकें देखकर मैं रोमांचित हूँ।
- **डॉ. नरेन्द्र कोहली** (प्रख्यात हिंदी लेखक) : मुझे चिंता उनकी नहीं जो पुस्तकें नहीं पढ़ते हैं, बल्कि उनकी है जो पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं, पर उन्हें पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पातीं।
- **श्री अशोक चक्रधर** (हास्य कवि) : इस मेले में सबसे अच्छी बात यह हुई कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने इसका 'एप' तैयार किया।
- **श्री एस.वाई. कुरेशी** (पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त) : यह देखकर दिल से खुशी हो रही है कि इंटरनेट युग में किताबों का चलन कम नहीं हुआ है।
- **श्री विनोद वैश्य** (पूर्व सचिव, दूरसंचार, भारत सरकार): यह दुर्लभ मेला है, ऐसा और कहीं नहीं होता। इसे होते रहना चाहिए।
- **डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी** (प्रख्यात लेखक-आलोचक) : यहाँ (पुस्तक मेला) आकर पता चलता है कि लोगों के मन में कितनी ज्ञान-पिपासा है, भारतीय भाषाओं के प्रति कितनी प्यास है।
- **प्रो. नित्यानंद तिवारी** (प्रख्यात आलोचक) : मुझे लगता था कि पढ़ने की संभावनाएँ कम हो रही हैं, लेकिन यहाँ आकर बल मिलता है।
- **प्रो. केदारनाथ सिंह** (वरिष्ठ कवि) : मेला अच्छा है, सुनियोजित है, सुआयोजित है। पाठकों की संख्या और बढ़े इस पर न्यास को विचार करना चाहिए।
- **श्री ए. सेतुमाधवन** (न्यास-अध्यक्ष) : मुझे यह कहते हुए अपार खुशी हो रही है कि आज समाप्त होने वाला नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2015 बेहद सफल रहा। ... विगत कुछ वर्षों में हमारे प्रयासों ने न केवल हमारी पहुँच को विस्तार दिया बल्कि प्रकाशन उद्योग के स्टेकहोल्डर्स की वृहतर भागीदारी को समर्थ बनाया और लेखक, विद्वान एवं सामान्य लोगों की भी भागीदारी बढ़ी।

बाल मंडप

"जब अपने घर में एक बेटा/बेटी को देखकर मन खुशी से भर जाता है तो जहाँ इतने सारे बच्चे एक साथ हों वहाँ खुशी की क्या सीमा होगी!" प्रगति मैदान के हॉल सं. 7 में विशेष रूप से निर्मित बाल मंडप का उद्‌घाटन करते हुए केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री (माध्यमिक शिक्षा) श्री उपेंद्र कुशवाहा के ये उद्‌गार थे। उद्‌घाटन-अवसर पर सिंगापुर के राष्ट्रपति रहे एस.आर. नाथन के जीवन के 50 प्रसंगों वाली, न्यास से प्रकाशित पुस्तक के अँग्रेज़ी एवं हिंदी संस्करण (अनु : सुधीर नाथ झा एवं पंकज चतुर्वेदी) का भी लोकार्पण किया गया। मंत्री महोदय ने बच्चों से कहा– खूब पढ़ो और खूब बढ़ो।

बाल मंडप नौ दिनों तक हँसते बचपन की मासूम खिलखिलाहट से महकता रहा। बाल मंडप की सजावट विशेष तौर पर इस तरह की गई थी जहाँ आते ही बच्चों को अपनापन लगने लगता था। बाल मंडप में प्रवेश करते ही एक पुस्तक के कई चित्र चैनलों में सज्जित दिखते थे। आगे राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (न्यास का अनुभाग) द्वारा देशभर से प्रकाशित बाल पत्रिकाओं का प्रदर्शन किया गया था। दीवार पर पोस्टर कॉमिक्स बच्चों को खासा लुभाते थे। दिवंगत कार्टूनिस्ट आर.के. लक्ष्मण को श्रद्धांजलिस्वरूप रा.पु. न्यास द्वारा उनके कुछ कार्टून प्रदर्शित किये गए थे। ई-बुक्स के क्षेत्र में रा.पु. न्यास की पहल और कार्य को दर्शाता एक स्टॉल पुस्तकप्रेमियों को आकर्षित कर रहा था। एक स्टॉल राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के पुस्तकालय के संबंध में जानकारी देने के उद्‌देश्य से निर्मित था। मध्य में निर्मित मंच कार्यक्रम प्रस्तुति का गवाह था।

बाल मंडप में प्रतिदिन बच्चों से संबंधित अनेकानेक कार्यक्रम होते रहे। इनमें बाल लेखक से मुलाकात, संगोष्ठी, पुस्तक लोकार्पण, नाटक, कार्यशाला, पेंटिंग निर्माण, कथावाचन, गीत-नृत्य प्रस्तुति आदि शामिल थे। ये कार्यक्रम रा.पु. न्यास एवं विभिन्न स्कूल/संगठन आदि की प्रस्तुति होते थे। बाल मंडप में बच्चों द्वारा अनेक प्रस्तुतियों में, सफदर हाशमी की प्रसिद्ध कविता, 'किताबें हमसे कुछ कहना चाहती हैं, हमारे पास रहना चाहती हैं' का वाचन बच्चों में उत्प्रेरणा और प्रोत्साहन भर गया।

बाल मंडप के विभिन्न कार्यक्रमों में जिन लेखक, चित्रकार आदि की भागीदारी रही उनमें प्रमुख थे : डॉ. रेणु पंत, मनोज दास, आबिद सुरती, सुबीर रॉय, शेखर सरकार, अरविंद कुमार, शरद शर्मा, अशोक श्रीवास्तव,

जॉली जलालुद्दीन, विमलेश कांति वर्मा, विभा देवसरे, रमेश तैलंग, कुसुमलता सिंह, शशी जैन, देवेन्द्र मेवाड़ी, नीना झा, तन्मय त्यागी, कामना झा, ब्रिगे. टीपीएस चौधरी, प्रयाग शुक्ल, लीलाधर मंडलोई, रमेश बिजलानी, उषा वेंकटरमण, बिंदिया सहगल, ललित शर्मा आदि।

बाल मंडप में समय-समय पर न्यास-अध्यक्ष सेतुमाधवन, न्यास-निदेशक एम.ए सिकंदर एवं न्यास के संयुक्त निदेशक हेमंत कुमार श्रीवास्तव का आगमन होता रहा और ये भागीदारों की हौसला अफजाई करते रहे। अंतरराष्ट्रीय हस्तियों में हॉलैंड के भारत स्थित राजदूत अल्फॉन्सस स्टोएलिंग एवं सिंगापुर नेशनल बुक काउंसिल के कार्यकारी निदेशक डॉ. आर. रामचंद्रन प्रमुख थे।

थीम मंडप

पुस्तक मेले की थीम प्रस्तुति के रूप में इस वर्ष का विषय 'सूर्योदय : पूर्वोत्तर भारत के उभरते स्वर' रखा गया था। इसके अंतर्गत पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध एवं बहुविध सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं को दर्शाती झाँकी प्रस्तुत की गई। थीम मंडप को पूर्वोत्तर क्षेत्र की कला-संस्कृति एवं परंपरा के अनुकूल सजाया गया था। थीम मंडप के दो मुख्यद्वारों को सजाने में पशु के मुखौटे, टोकरी, तुणीर आदि का उपयोग किया गया था। आंतरिक सज्जा में परंपरागत पंखे, हैट, टोकरी, पूर्वोत्तर की पेंटिंग आदि का उपयोग हुआ। पूर्वोत्तर के जनजीवन में बाँस का महत्व यहाँ साफ-साफ दिख रहा था। मंडप में विभिन्न शेल्फ में पूर्वोत्तर के जनजीवन से जुड़ी हिंदी, अँग्रेज़ी समेत विभिन्न भाषाओं की दो सौ से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं। न्यास से पूर्वोत्तर-केंद्रित 23 पुस्तकें (हिंदी) भी प्रदर्शित थीं। फिर, मंडप में विशेष रूप से बनाये गए दसेक पैनलों के दोनों ओर पूर्वोत्तर भारत की कला, संस्कृति और परंपरा को अभिव्यक्त करते हुए दो दर्जन से अधिक रंगीन पोस्टर, संदर्भित जानकारी से युक्त, प्रदर्शित किये गए थे जिसे देख-पढ़कर पूर्वोत्तर के जनजीवन को एक नजर में जाना जा सकता था। पूर्वोत्तर की भाषाओं की जानकारी देता हुआ भी एक पैनल था। एक पर पूर्वोत्तर की फिल्म और उनके निर्माता के चित्र और एक में मंडप में भागीदार विमर्शकर्ताओं के चित्र प्रदर्शित थे।

मेले के प्रत्येक दिन मंडप में थीम आधारित अनेक साहित्यिक कार्यक्रम, कार्यशाला, बौद्धिक विमर्श, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ होती रहीं। पूर्वोत्तर की फिल्मों का नित प्रति प्रदर्शन मंडप की खास विशेषता थी। फिल्म के निर्माता-निर्देशक से श्रोताओं का आपसी संवाद भी हुआ। जिन महत्वपूर्ण हस्तियों से बातचीत या रूबरू कार्यक्रम यहाँ हुए उनमें थे— जाह्नू बरुआ, ममांग दई, प्रो. संजय हजारिका, संदीप फुकन, मित्र फुकन, डॉ. जाय एल के पचुआ, तिलोत्तमा मिश्र, प्रीति गिल, संजीव काकोती, निम्मी कुरियन, आरुणि कश्यप, जेनिस पेरियर, निर्मलकांति भट्टाचार्जी, डॉ. अरूपा पतंगिया, अरूप कुमार दत्ता, सिद्धार्थ शर्मा, आशीष गुप्ता, शांतनु तामुली, उत्पल बोरपुजारी आदि। रा.पु. न्यास द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पुस्तकप्रेमियों को मिजोरम के प्रसिद्ध फुटबॉल खिलाड़ी जिको जोरेमसंग से बातचीत का अवसर मिला।

मंडप में पूर्वोत्तर से जुड़ी अनेकानेक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने आम लोगों का पूर्वोत्तर की कला-संस्कृति से परिचय कराया। इन प्रस्तुतियों में मुख्य थे— रिदा गटफोह एवं उनकी टीम, मंगा एवं उनकी टीम 'लैहुई' द्वारा मणिपुरी लोक संगीत, तेत्सिओ बहनों तथा हेमंत जमातिया की प्रस्तुति आदि।

पूर्वोत्तर के संबंध में प्रख्यात फिल्म निर्देशक जाह्नू बरुआ के इस कथन से हम भारतवासी अवश्य ही सहमत होंगे— "पूर्वोत्तर भारत प्रतिभा का खजाना है व कला एवं संस्कृति से भरपूर है, परंतु देश के 5 प्रतिशत लोग ही पूर्वोत्तर की संस्कृति से परिचित हैं।" विदित हो कि 'पूर्वोत्तर' से आशय इस क्षेत्र के आठ राज्यों से है। ये हैं : असम, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नगालैंड एवं त्रिपुरा।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा और उसकी सहभागिता से आयोजित कार्यक्रम

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के दौरान राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा और उसकी सहभागिता से अनेक कार्यक्रमों के आयोजन हुए। कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है : 'बदलते परिवेश में साहित्य की भूमिका' विषय पर आयोजित व्याख्यान (14 फर.) में प्रो. मैनेजर पांडे और नित्यानंद तिवारी ने अपने विचार व्यक्त किए। 'पूर्वोत्तर की समझ : बदलते परिप्रेक्ष्य' विषय पर संपन्न गोष्ठी (15 फर.) से उभरे विमर्श ने वहाँ के आठ राज्यों तथा शेष भारत के लिए अनेक सवाल खड़े किए जिन पर विचार जरूरी है। संचालन संजय हजारिका का रहा। ईरान सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से चित्र कार्यशाला (15 फर.) में न्यास की ओर से देबु सरकार (कला प्रमुख) एवं मानस रंजन महापात्र (संपादक) ने भाग लिया। गोयथे इंस्टीट्यूट के सहयोग से अनुवाद कार्यशाला तथा प्रो. मनोज दास की पुस्तक का लोकार्पण अन्य कार्यक्रम रहे। आदिवासी लेखन पर चर्चा भी हुई। 16 फर. को 'ब्रिजिंग गैप्स : राइटर्स, हिस्टोरियन एंड राइटिंग हिस्ट्री ऑफ नॉर्थ-ईस्ट' पर संगोष्ठी का आयोजन जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सहयोग से हुआ। बीआइबीएफ द्वारा न्यास के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में 2016 के विश्व पुस्तक मेला में चीन के वशिष्ट अतिथि देश होने विषयक प्रस्तुति थी। 'वर्तमान लघुकथा : सृजन और आलोचना' के पहले भाग में लघुकथा पाठ तथा दूसरे भाग में लघुकथा की आलोचना पक्ष पर चर्चा हुई। बाल साहित्य पर चर्चा तथा पुस्तक लोकार्पण में प्रकाश मनु, प्रताप सहगल, नासिरा शर्मा, दिविक रमेश व रमेश तैलंग भागीदार रहे। 'स्त्री : तब और अब' पर चर्चा-क्रम में मैत्रेयी पुष्पा, सुमन केसरी, सोनी पांडेय, मृदुला शुक्ला ने वक्तव्य प्रस्तुत किए। 17 फर. को 'अनुवाद और भारत के विचार' गोष्ठी में न्यास-अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन भी बोले। सेंट स्टीफेंस कॉलेज के प्राचार्य डॉ. वाल्सन थिंपु कार्यक्रम के अध्यक्ष थे। दो अन्य सत्र भी हुए। अन्य प्रमुख वक्ता थे— के. सच्चिदानंद, निर्मलकांति भट्टाचार्जी आदि। हाल ही में दिवंगत हुए प्रख्यात कार्टूनिस्ट आर.के. लक्ष्मण की स्मृति को समर्पित कार्यक्रम में तन्मय त्यागी बोले। समन्वय संगत में 'इनसाइड आउट : लिविंग ऑन द एज ऑफ ए नेशन' थीम पर चर्चा हुई। न्यास-अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन का परिचयात्मक संबोधन रहा। लेखक मंच पर काव्य संध्या में सुरेश कुमार वशिष्ठ, पंकज राग, संजय अलग आदि कवियों ने भाग लिया।

18 फर. को 'हिंसा से परे : पूर्वोत्तर का कथा-साहित्य' विषय पर इस बात पर विमर्श हुआ कि क्या उत्तर-पूर्वी राज्यों के कथा साहित्य में इस त्रासदी के अलावा भी कुछ है कि नहीं। संचालन निर्मलकांति भट्टाचार्जी का रहा। न्यास की पुस्तक 'एडवेंचर्स स्पोर्ट्स' के लेखक बिग्रे. टीपीएस चौधरी एवं एक अन्य लेखक रमेश बिजलानी ने अपनी रचना प्रक्रिया पर बात की। 'विवेकानंद और शिक्षा नीति' विषय पर चर्चा-गोष्ठी में नरेंद्र कोहली एवं डॉ. श्याम सिंह 'शशि' ने विचार व्यक्त किए। डॉ. कोहली ने कहा कि स्वामी जी ने सदैव उस शिक्षा पर बल दिया जो मनुष्य को मानवता का पाठ पढ़ा सके। श्री शशि ने कहा कि देश की युवा पीढ़ी को स्वामी जी के विचारों की आवश्यकता है। धन्यवाद ज्ञापन न्यास-निदेशक श्री सिकंदर का रहा। संचालन न्यास में हिंदी के सहायक संपादक पंकज चतुर्वेदी का था। के.के. बिरला फाउंडेशन के सहयोग से 'यह याद रही मुलाकातें' विषय पर पद्मा सचदेव ने इस्मत चुगताई के साथ अपनी यादें ताजा कीं। अजीत कुमार ने निराला व बच्चन के साथ के किस्से सुनाए। ग़ज़ल संध्या में अनेक ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लें सुनाईं। 19 फर. को 'आख्यानों का विनिमय : पूर्वोत्तर का स्त्री-स्वर' ममांग दई के संचालन में हुआ। नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज के सहयोग से मुशायरा और कुछ उर्दू पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। कहानीकार सूरज प्रकाश से बातचीत कार्यक्रम साहित्य मंच में हुआ।

20 फर. को 'मेरी धरती, मेरी कहानियाँ : पूर्वोत्तर का बाल साहित्य' विषय पर चर्चा में अरूप दत्ता, सिद्धार्थ शर्मा, शांतनु तामुली एवं आशीष गुप्ता विमर्शकार रहे। लेखक से मुलाकात कार्यक्रम में साहित्यकार एवं गोवा की राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा ने अपनी कई रचनाओं का उल्लेख किया, साथ ही अपने संस्मरण एवं भोजपुरी के गीत भी सुनाए। न्यास-निदेशक डॉ. सिकंदर ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। लेखक से मिलिए के अन्य सत्र में मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा तथा चित्रा मुद्गल से संवाद हुआ। 21 फर. को 'पूर्वोत्तर भारत के सिनेमाई स्वर' पर चर्चा में जाह्नू बरुआ और वानफरांग दिग्दोह शामिल हुए। संचालन उत्पल बोरपुजारी का रहा। गद्य व्यंग्य पाठ में अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ सुनाईं। अंतिम दिन, यानी 22 फर. को 'अंतर्जाल के दौर में ई-पुस्तकों का भविष्य' विषय पर चर्चा डॉ. कमल किशोर गोयनका की अध्यक्षता में हुई। कहानी पाठ में तीन कहानीकारों के कहानी पाठ हुए। अध्यक्षता प्रो. गंगा प्रसाद विमल की थी। अशोक चक्रधर के एकल काव्य पाठ का संचालन ललित किशोर मंडोरा (न्यास में हिंदी के सहायक संपादक) ने किया। 'हिंदी अनुवाद, विविध आयाम' विषयक चर्चा में अनेक वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए।

पुस्तक मेले में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की कुछ झलक

वरिष्ठ पत्रकार श्री बल्देव भाई शर्मा ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष का पदभार सँभाला

''राष्ट्रीय पुस्तक न्यास एक ऐसा बौद्धिक संस्थान है जिसके पास भारतीय ज्ञान-परंपरा को प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी है। ऐसे संस्थान में काम करने वाले को मन का संतोष मिलता है, लेकिन साथ ही सामाजिक जिम्मेवारी निभाने का भाव भी होता है।'' राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री बल्देव भाई शर्मा ने न्यासकर्मियों के साथ अपने पहले दिन की अनौपचारिक बैठक में ये उद्‌गार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि 'इस संस्थान को एक सबल, सक्षम संस्थान बनाना है, इसे जीवंत और सशक्त रूप प्रदान करना है। समन्वित भाव से जुड़कर काम करें तो हम सब ऐसा कर सकते हैं। बहुत मुश्किल नहीं होता किसी संस्था का चेहरा बदलना। ...सब मिल-जुलकर सकारात्मक भाव से काम करें तो संस्था का विकास होते देर नहीं लगती।' अध्यक्ष महोदय ने पुलकित होकर कहा, ''न्यास परिवार में अब मेरा नाम भी जुड़ गया है।'' श्री शर्मा ने भावुक उद्‌बोधन में न्यास को बार-बार 'परिवार' कहकर निरूपित किया और सहयोग एवं समन्वय से साथ-साथ चलने का आह्‌वान किया।

कार्यक्रम की शुरुआत न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर द्वारा नए अध्यक्ष महोदय के परिचय के साथ हुई। निदेशक महोदय द्वारा संक्षिप्त परिचयात्मक संबोधन के उपरांत नवनियुक्त अध्यक्ष श्री बल्देव शर्मा ने बड़ी संख्या में उपस्थित समस्त न्यासकर्मियों को संबोधित किया।

वरिष्ठ पत्रकार व चिंतक श्री बल्देव भाई शर्मा ने 4 मार्च, 2015 को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (उच्चत्तर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्थान) के अध्यक्ष पद का कार्यभार सँभाल लिया। श्री शर्मा 'दैनिक स्वदेश', 'दैनिक भास्कर', 'अमर उजाला' में संपादक रहे हैं। सन् 2008 में श्री शर्मा को राष्ट्रीय साप्ताहिक 'पांचजन्य' का संपादक बनाया गया और वे वहाँ 2013 तक रहे। तदुपरांत, दैनिक पत्र 'नेशनल दुनिया' के संपादक के रूप में कार्यरत उन्होंने पत्र को नई ऊँचाइयाँ दीं। उन्होंने राष्ट्रीय और सामाजिक महत्व के मुद्दों पर सभी

प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के लिए लेखन किया है। वे विभिन्न हिंदी समाचार चैनलों पर राजनीतिक व सामाजिक विषयों पर होने वाले विमर्शों के चर्चित चेहरे हैं। वे आकाशवाणी से विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लंबे समय से जुड़े रहे हैं। श्री शर्मा कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच

नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच (नई दिल्ली राइट्स टेबल) भारत तथा विदेशों से आए प्रकाशकों, प्रतिलिप्यधिकार एजेंटों, अनुवादकों व संपादकों को व्यापार अवसरों का परस्पर लाभ उठाने हेतु एक मंच प्रदान करता है। नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच ने एक नवीन व्यावसायिक परिवेश में प्रकाशकों के बीच व्यापारिक सत्र आयोजित कर उन्हें अनुभव साझा करने का अवसर प्रदान किया। साथ ही इस अद्वितीय प्रारूप ने प्रतिभागियों को अपने प्रतिलिप्यधिकार मंच को सुरक्षित करने, परस्पर भेंट करने, अपने उत्पाद एवं विचार प्रस्तुत करने व अँग्रेज़ी, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध पुस्तकों के अनुवाद एवं अधिकारों के हस्तांतरण हेतु अपनी अभिरुचियों को प्रस्तुत करने का भी अवसर प्रदान किया। इस वर्ष प्रतिलिप्यधिकार मंच कार्यक्रम के लिए भारत तथा विदेशों से लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया और यह कार्यक्रम 16 और 17 फरवरी को संपन्न हुआ।

प्रतिलिप्यधिकार मंच में 80 से ज्यादा सहभागी

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला में पुस्तकों के प्रतिलिप्यधिकार (कॉपीराइट) के आदान-प्रदान के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा स्थापित दो दिवसीय विशेष मंच में 80 से अधिक भारतीय व विदेशी प्रकाशकों, लेखकों ने सहभागिता की। यहाँ सहभागी अपनी पुस्तकें लेकर आते हैं तथा अन्य भागीदार उन्हें अपनी भाषा, देश या क्षेत्र विशेष के लिए प्रकाशन करने के अधिकार की खरीद-बिक्री पर सीधे बात करते हैं। इसके उद्‌घाटन-अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन ने कहा कि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का राइट्स टेबल अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि पा चुका है। इस अवसर पर सिंगापुर बुक डेवलपमेंट काउंसिल के कार्यकारी निदेशक ए. रामचंद्रन भी उपस्थित थे। यह स्थान प्रकाशन उद्योग से जुड़े लोगों के व्यावसायिक विस्तार, अनुवाद, रूपांतरण के प्रतिलिप्यधिकार पर विमर्श करने का अनूठा खुला मंच था। इसमें ईरान, सिंगापुर, मलेशिया, ब्रिटेन, बांग्लादेश, कनाडा, चीन, अमेरिका, पोलैंड आदि देशों के 28 सहभागियों के अलावा भारत के सभी राज्यों से बड़े प्रकाशन संस्थानों ने भाग लिया।

सीईओ स्पीक ओवर चेयरमैन'स ब्रेकफास्ट

मेले के एक भाग के रूप में इस कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 2013 में की गई। कार्यक्रम का उद्‌देश्य भारत में प्रकाशक समुदाय के साथ अधिक-से-अधिक संपर्क स्थापित कर व्यवसाय तथा पुस्तक-व्यापार संबंधी विषयों पर चर्चा साझा करने हेतु मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीईओ) को एक मंच प्रदान करना है। इस अवसर पर प्रकाशन उद्योग से आए लगभग 100 से 120 मुख्य कार्यकारी अधिकारी, प्रबंध निदेशक, निदेशक तथा वरिष्ठ कार्यकारियों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम 15 फरवरी को न्यास के अध्यक्ष द्वारा आयोजित ब्रेकफास्ट के पश्चात आरंभ हुआ।

न्यास-अध्यक्ष ए. सेतुमाधवन के कहानी संग्रह का लोकार्पण

रा.पु. न्यास के अध्यक्ष (तत्कालीन) ए. सेतुमाधवन की कहानियों का संग्रह, 'ए गेस्ट फॉर अरुंधती एंड अदर स्टोरीज' का प्रख्यात लेखक डॉ. हरीश खरे द्वारा लोकार्पण किया गया। पुस्तक का मलयालम भाषा से अनुवाद किया गया था एवं प्रकाशक था पलिम्सेस्ट पब्लिशिंग हाउस।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4077/2015-17
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2015-17
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/03/2015

लेखक मंच व साहित्य मंच

गत वर्ष की सफलता से प्रोत्साहित होकर इस वर्ष भी नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला (न.दि.वि.पु.मे.) में लेखकों के लिए चार खुले मंचों की स्थापना की गई। दो मंच, क्रमशः लेखक मंच एवं साहित्य मंच, हिंदी साहित्यकारों के लिए थे, जबकि दो मंच, क्रमशः 'रिफ्लेक्शंस' एवं 'कन्वर्सेशंस' अँग्रेज़ी साहित्यकारों के लिए। ये मंच क्रमशः हॉल सं. 12, 8, 10 तथा 14 में स्थापित किये गए थे। कहना न होगा कि पुस्तक मेला में सबसे अधिक पुस्तकप्रेमी इन्हीं मंचों पर आयोजित पुस्तकीय एवं लेखकीय गतिविधियों में भागीदार होते थे। पुस्तक लोकार्पण, संगोष्ठी, पैनल विमर्श, लेखक से मुलाकात, बातचीत या संवाद, पठन सत्र आदि साहित्यिक गतिविधियों के गवाह रहे ये चारों मंच। विदेशी मंडप (हॉल 7 ए) में 'इवेंट्स कॉर्नर' था जो विदेशी साहित्यिक गतिविधियों के लिए था।

लेखक मंच और साहित्य मंच प्रतिदिन अनेकानेक साहित्यिक गतिविधियों के केंद्र रहे जहाँ लेखक, पाठक और पुस्तकप्रेमी और प्रकाशक होते थे। इन मंचों पर होने वाले कार्यक्रमों में शामिल थे – पुस्तक लोकार्पण, पुस्तक चर्चा, साहित्य चर्चा, गोष्ठी/संगोष्ठी, पैनल विमर्श, लेखक से मुलाकात, रचना पाठ, कविता पाठ आदि।

पुस्तक मेला 2015 : एक नज़र में

● मेला स्थल : प्रगति मैदान, नई दिल्ली ● क्षेत्रफल : 37,000 वर्ग मीटर ● हॉल सं. : 1, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12 तथा 12 ए एवं 14 ● प्रदर्शकों की संख्या : लगभग 1100 (भारतीय एवं विदेशी) ● स्टॉल/स्टैंड की संख्या : 2050 ● भागीदार देश/अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ : 30

मेला समाचार बुलेटिन : विश्व पुस्तक मेला की अवधि (14 से 22 फरवरी, 2015) में मेला स्थल पर प्रतिदिन अनेकानेक साहित्यिक, पुस्तकीय एवं सांस्कृतिक आयोजन हुए। वृहत् पैमाने पर होने वाली इन गतिविधियों, मेले की में आने वाले पुस्तकप्रेमियों की सुविधा के लिए, न्यास द्वारा संकलन एवं प्रकाशन की व्यवस्था की गई थी। हिंदी में प्रतिदिन 'मेला वार्ता' तथा अँग्रेजी में 'शो डेली' के प्रकाशन होते रहे।

पुस्तक मेले में ये भी आए

मृदुला सिन्हा, साहित्यकार एवं राज्यपाल-गोवा; महेश भट्ट, फिल्म निर्माता-निर्देशक एवं लेखक; जावेद अख्तर, गीतकार एवं पटकथा लेखक; वीरेंदर सहवाग, भारतीय क्रिकेटर; उपेंद्र कुशवाहा, राज्य मंत्री- मानव संसाधन विकास मंत्रालय; उमा भारती, राज्य मंत्री-जलसंसाधन; मनोज सिन्हा, राज्य मंत्री-रेलवे; एस.वाई. कुरेशी, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त; मनीष सिसोदिया, उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार; किरण बेदी, पूर्व पुलिस अधिकारी, दिल्ली; कुमार विश्वास, कवि एवं नेता-आप; पुण्य प्रसून वाजपेयी, मीडियाकर्मी-आजतक; रवीश कुमार, मीडियाकर्मी-एनडीटीवी; सुधीर चौधरी, मीडियाकर्मी-जी न्यूज; आशुतोष, पूर्व मीडियाकर्मी एवं नेता-आप; फ्रांक्वा रीशेर, राजदूत-फ्रांस; जिको जोरनसांगा, प्रसिद्ध फुटबॉलर।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास संवाद भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेल: office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा अरावली प्रिन्टर्स एवं पब्लिसर्स प्रा.लि., डब्ल्यू 30, ओखला फेज-II, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से टाइपसेट एवं मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070